महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE

हिंदी विश्वविद्यालय के डॉ. हरीश पाण्डेय एवं उनकी टीम को गणित सिखाने के संयंत्र को मिला पेटेंट
छात्र अब आसान एवं रोचक तरीके से सीख सकेंगे गणित

वर्धा, 09 अप्रैल 2024 : भारतीय लोकविद्या एवं विभिन्न नृजातीय समूह जैसे कुम्हार, बढ़ई, बुनकर इत्यादि की पम्परागत विद्या के माध्यम से गणित शिक्षण अधिगम को रोचक एवं ज्ञानवर्धक रूप से विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करने हेतु महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के डॉ. हरीश पाण्डेय एवं उनकी टीम द्वारा निर्मित नृजातीय गणित सिद्धांत पर आधारित गणित अधिगम

यंत्र को भारत सरकार द्वारा डिज़ाइन पेटेंट प्रदान किया गया है। टीम ने अनूठा उपकरण डिजाइन किया है जो स्कूली बच्चों को आसान और आकर्षक तरीके से गणित सिखाने में सक्षम है। भारत सरकार के डिजाइन और ट्रेडमार्क महानियंत्रक की ओर से डिवाइस को हाल ही में पेंटेंट प्रदान किया गया है। यह 17 इंच स्क्रीन वाला कॉम्पैक्ट डिवाइस है। डिवाइस को तैयार करने में तकरीबन 20 हजार रुपये खर्च हुए हैं। टीम का मानना है कि इसके बड़े पैमाने पर उत्पादन में लागत आधी हो जाएगी। टीम में देश के अलग-अलग केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के तीन अन्य सदस्य इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज के डॉ. मनीष कुमार गौतम, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली के प्रो. कौशल किशोर एवं दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय के डॉ. किशोर कुमार शामिल हैं|

नृजातीयगणित आधारित शिक्षण अधिगम उपागम पर शोध कर चुके हिंदी विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. हरीश पाण्डेय ने बताया कि गणित सीखने के इस उपकरण को विकसित करने और कुम्हार जैसे भारतीय कारीगरों के पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करने में लगभग एक वर्ष से अधिक का समय लगा, जो अपने अनूठे तरीकों का उपयोग करके सटीक माप के साथ चीजें बनाते हैं। उन्होंने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) प्रौद्योगिकी के एकीकरण के बाद, कक्षा 6 से 8 तक के छात्रों के लिए गणित निर्देशों में काफी सुधार होगा, यही वह समय होता है जब छात्रों के बीच गणित का आधार विकसित होता है। छात्र इस डिवाइस से वास्तविक समय की प्रतिक्रिया के साथ अपनी प्रगति को ट्रैक कर सकते हैं और गणित सम्प्रत्यों का विकास कर सकते हैं। नृजातीयगणित उपागम के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता से सुसज्जित होने के उपरांत यह अधिगम यंत्र विद्यार्थियों की गणितीय अभिक्षमता,

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

कमजोरियों और सीखने के पैटर्न का विश्लेषण करेगा तदनुसार शिक्षण अधिगम सामग्री सहायता के साथ उचित निर्देश विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करेगा॥ डॉ गौतम ने बताया कि यह डिवाइस एआई एल्गोरिदम की सहायता से विभिन्न आयुवर्ग और कौशल स्तरों के विद्यार्थियों के लिए व्यक्तिगत और इंटरैक्टिव शिक्षण-अधिगम अनुभव प्रदान करेगा॥ प्रो. कौशल किशोर ने आगे जोड़ते हुए यह बताया कि गणित शिक्षण अधिगम का यह उपकरण विद्यार्थियों को व्यावहारिक सीखने के अनुभवों में संलग्न करने के लिए विभिन्न प्रकार के इंटरैक्टिव अभ्यास, पहेलियाँ और सिमुलेशन प्रदान करेगा, जो प्रमुख रूप से गणितीय अवधारणाओं को सुदृढ़ करने और क्रांतिक सोच कौशल को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। डॉ. किशोर ने इसकी गणितीय शिक्षण उपयोगी विशेषताओ के बारे में बताया कि इस उपकरण में अभिप्रेरणा, पुरस्कार और प्रगति ट्रैकिंग जैसे गेमिफिकेशन तत्व शामिल हैं, जो विद्यार्थियों को लक्ष्यनिर्धारित करने, उनकी उपलब्धियों की निगरानी करने और निरंतर सुधार के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। तदनुसार यह कहा जा सकता है कि नृजातीय गणित सिद्धांत पर आधारित यह गणित शिक्षण-अधिगम उपकरण गणित शिक्षा को आनंददायक, ज्ञानवर्धक एवं गणितीय दुश्चिंता से मुक्त विद्यार्थियों को नवीन शिक्षण अधिगम अनुभव प्रदान करेगा॥

हिंदी विद्यापीठाचे डॉ. हरीश पांडे यांच्या गणित शिकण्याच्या संयंत्राला मिळाले पेटंट
विद्यार्थ्यांना आता सहज आणि मनोरंजक पद्धतीने शिकता येणार गणित

वर्धा, 09 एप्रिल 2024: भारतीय लोककथा आणि विविध वांशिक समूह जसे कुंभार, सुतार, विणकर यांसारख्या पारंपारिक ज्ञानच्या माध्यमातून विद्यार्थ्यांना रंजक आणि माहितीपूर्ण रीतीने गणित शिकवणे आणि शिकणे यासाठी वर्धा येथील महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे डॉ. हरीश पांडे आणि त्यांच्या टीमने तयार केलेल्या वांशिक गणिताच्या सिद्धांतावर आधारित गणित शिकण्याचे उपकरण भारत सरकारने डिझाइन पेटंट मंजूर केले आहे. या चमूने एक अद्वितीय साधन तयार केले आहे जे शाळेतील मुलांना सहज आणि आकर्षक पद्धतीने गणित शिकवण्यास सक्षम आहे. या उपकरणाला नुकतेच कंट्रोलर जनरल ऑफ डिझाईन आणि ट्रेडमार्क, भारत सरकार यांनी पेटंट मंजूर केले आहे. हे 17 इंच स्क्रीनसहकॉम्पॅक्ट डिव्हाइस आहे. हे उपकरण तयार करण्यासाठी सुमारे 20 हजार रुपये आला आहे. देशातील विविध केंद्रीय विश्वविद्यालयांमधील चमूत इतर तीन सदस्य अलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराजचे डॉ. मनीष कुमार गौतम, जामिया मिलिया इस्लामिया, नवी दिल्ली येथील प्रो. कौशल किशोर आणि दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालयाचे डॉ. किशोर कुमार यांचा समावेश आहे.

हिंदी विश्वविद्यालयाच्या शिक्षण विभागाचे सहायक प्राध्यापक डॉ. हरीश पांडे म्हणाले की कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआय) तंत्रज्ञानाच्या एकत्रीकरणानंतर इयत्ता 6 वी ते 8 वी पर्यंतच्या विद्यार्थ्यांसाठी गणिताच्या सूचनांमध्ये लक्षणीय सुधारणा होईल, हीच वेळ असते जेव्हा विद्यार्थ्यांमध्ये गणिताचा पाया विकसित होतो. विद्यार्थी त्यांच्या प्रगतीचा मागोवा घेऊ शकतात आणि या डिव्हाइसवरून रिअल-टाइम फीडबॅकसह गणिताच्या संकल्पना विकसित करू शकतात. एथनोमॅथेमॅटिक्सच्या दृष्टिकोनासह कृत्रिम बुद्धिमत्तेने सुसज्ज झाल्यानंतर, हे शिक्षण उपकरण विद्यार्थ्यांच्या गणितीय योग्यतेचे, कमकुवतपणाचे आणि शिकण्याच्या पद्धतींचे विश्लेषण करेल आणि त्यानुसार विद्यार्थ्यांना अध्यापन सामग्रीच्या समर्थनासह योग्य सूचना सादर करेल असे ही ते म्हणाले.